प्रवचन

परमहंसश्रीहंसानंदजीसरस्वतीदण्डीस्वामीजी

विषय तालिका

CD # 05 *AUG 2006 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.08.06	51				पुनर्जन्म, ज्ञान परम्परा, अवान्तर एवं महावाक्य	**
2	02.08.06	39				भग० का रूप-स्वरूप यानि ससा०-निनि० स्वरूप निरूपण, जा०स्व०सु०/ मल-विक्षेप-आवरण की कर्म-उपासना- ज्ञान से निवृत्ति	Imp
3	03.08.06	40				गीता : १३/१६-२१ :: प्रकृति और पुरुष दो ही पदार्थ हैं, प्रकृति-पुरुष का स्वरूप एवं विभाग निरूपण	**
4	04.08.06	60				अमृत रूपी गीता ज्ञान का महात्म्य	
5	05.08.06	51				ब्रह्म का सत् चित् आनंद स्वरूप निरूपण, आधार-अधिष्ठान एवं सामान्य और विशेष ज्ञान	Imp
6	06.08.06	46				दृग-दृश्य विवेक एवं आत्मा का स्वरूप -'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या..'- 'आत्मा साक्षी विभु पूर्णः चिद..'अहं ब्रह्मास्मि	
7	07.08.06	53				आनंद रामायण, राम ब्रह्म एवं सीता माया हैं । **श्रीराम जय राम जय जय राम** - मंत्र की व्याख्या	***
8	08.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
9	09.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
10	10.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
11	11.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
12	12.08.06	40				**पर ब्रह्म-अवर ब्रह्म** अथवा कारण-कार्य ब्रह्म अथवा नि०नि०-स०सा० ब्रह्म, **हृदय ग्रन्थि छेदन**	Imp
13	13.08.06	38				आत्मा निर्विकार एवं अकर्म है, सारे कर्म माया मे हैं । सहस्त्र मुख रावण की कथा और सीता का काली रूप	
14	14.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
15	15.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
16	16.08.06	31				यह जगत भगवान की सगुण-साकार लीला क्षेत्र है	
17	17.08.06	36				**स्कन्धोपनिषद** :- ५ ज्ञानेन्द्रियाँ व मन-षडानन, बुद्धि -माँ पार्वती, तीनों शरीर-देवालय एवं आत्मदेव शिव	Imp
18	18.08.06	46				ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैःव न पराः ।	Imp
19	19.08.06	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
20	20.08.06	52				छान्दोग्य उप० -सनत कुमारों का नारद जी को उपदेश	१
21	20.08.06[P]	35				छान्दोग्य उप० -सनत कुमारों का नारदजी को उपदेश, जगत माया है ।	२
22	21.08.06	48				छान्दोग्य उप० -सनत कुमारों का नारदजी को उपदेश	३
23	21.08.06[P]	30				गुरु महिमा	**
24	22.08.06	48				आत्मा-गुरु -गुरुपरम्परा :: मंगलाचरण की महिमा	**
25	22.08.06[P]	30				**श्रवण-मनन-निधिध्यासन** ००० 'कर्म-उपासना-ज्ञान' द्वारा 'मल-विक्षेप-आवरण' की निवृत्ति ०००	
26	23.08.06	31				ब्रह्म का निर्गुण-निराकार एवं सगुण-साकार स्वरूप निरूपण	Imp
27	23.08.06[P]	32				श्र०म०नि० ज्ञान के अनिवार्य अंग, **सामान्य ज्ञान-आधार, विशिष्ट ज्ञान-अधिष्ठान** एवं जगतरूपी अध्यास की अभिन्नता	Imp
28	24.08.06	47				ब्रह्म के स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण, विभिन्न सृष्टि क्रम - अध्यारोप-अपवाद एवं दृष्टा-दृश्य प्रक्रिया निरूपण,	Imp
29	24.08.06[P]	31				सत्य का मन्दिर ब्रह्म ही है वही जीव का स्वरूप है, शेष सब मिथ्या है	
30	25.08.06	44				मन माया है, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैःव न पराः	Imp
31	26.08.06	40				क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ का ज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान है, माया की तीनों अवस्थाऐं क्षेत्र एवं ब्रह्म क्षेत्रज्ञ है	Imp
32	27.08.06	51			१	**क्षर**-जागृत और स्वप्न, **अक्षर** - सुषुप्ति और प्रकृति, **उत्तम पुरुष** - ब्रह्मन्	Imp
33	28.08.06	46			२	**क्षर**-जागृत और स्वप्न, **अक्षर** - सुषुप्ति और प्रकृति, **उत्तम पुरुष** - ब्रह्मन्	Imp
34	31.08.06	56				ब्रह्म अनादि अनंत एवं माया/प्रकृति अनादि सान्त है, सत् चित् आनंद स्वरूप ब्रह्म कालातीत और देशातीत है	CM